साप्ताहिक

बुलंद गोंदिया

खबरों का आईना

प्रधान संपादक : **अभिषेक चौहान** । संपादक : **नवीन अग्रवाल**

E-mail : **bulandgondia@gmail.com** | E-paper : **bulandgondia.net** | Office Contact No.: **7670079009** | R. No.: **MAH-HIN-10169**

वर्ष : 3 | अंक : 10 | गोंदिया : गुरुवार, दि. 13 से 19 अक्टुबर 2022 | पृष्ठ : 4 | मूल्य : रु. 5

प्रधानमंत्री आवास योजना केंद्र का नहीं मिला अनुदान

गोंदिया नप क्षेत्र अंतर्गत १५५५ लाभार्थियों को राशि का इंतजार

बुलंद गोंदिया - देश में सब को आवास उपलब्ध हो प्रधानमंत्री की महत्वकांक्षी योजना प्रधानमंत्री आवास योजना चलाई जा रही है, किंतु उपरोक्त आवास योजना में मकान बनाने वाले लाभार्थियों को केंद्र सरकार से ही अनुदान की राशि नहीं मिलने से प्रधानमंत्री आवास योजना को ग्रहण लगता दिखाई दे रहा है। लाभार्थी अपने सपनों का मकान कैसा पूरा करेंगे इस पर प्रश्नचिन्ह निर्माण हो रहा है। इसी के अंतर्गत गोंदिया नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत तीन डीपीआर मंजूर हुए जिसमें 1555 लाभार्थियों के आवास मंजूर किए गए थे जिन्हें केंद्र के अनुदान का इंतजार है।

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत 2022 तक सभी को पक्के मकान उपलब्ध कराने का केंद्र सरकार द्वारा वादा किया गया था। जिसके लिए चार श्रेणियां तय की गई थी। जिसमें एक श्रेणी में जिनका जो गरीबी रेखा से नीचे आते हैं तथा खुद का कच्चा मकान है या प्लाट है। उन्हें ढाई लाख रुपए आवास योजना के लिए दिए जाएंगे, जिसमें केंद्र सरकार द्वारा 1,50,000 व राज्य सरकार द्वारा 1,00,000 का अनुदान दिया जाएगा। जिसके लिए गोंदिया शहर अंतर्गत नगर परिषद द्वारा सर्वे किया गया था। जिसमें करीब 3, 500 हजार आवेदन प्राप्त हुए थे। प्राप्त आवेदनों की जांच कर प्रथम डीपीआर के रुप में वर्ष 2018 में 515 लाभार्थियों के प्रस्ताव मंजूर हुए थे तथा वर्ष 2019 के दूसरे डीपीआर में 520 लाभार्थियों

के आवास मंजूर हुए तथा वर्ष 2022 के डीपीआर में 520 लाभार्थी के मकान मंजूर हुए तथा 2022-23 के लिए 500 को लाभार्थियों के प्रस्ताव भेजे गए हैं।

केंद्र सरकार का नहीं मिला पूरा अनुदान

गोंदिया नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत प्रथम व द्वितीय डीपीआर के लाभार्थियों द्वारा अपने आवास योजना का कार्य शुरु किया गया जिसे करीब 4 वर्ष की समय अवधि हो चुकी है। जिसमें दोनों डीपीआर में राज्य सरकार द्वारा दिया जाने वाला एक 1,00,000 का अनुदान तो उन्हें प्राप्त हो चुका है। तथा केंद्र सरकार के 1,50,000 के अनुदान में से मात्र 60,000 का ही अनुदान अब तक उन्हें प्राप्त हुआ है तथा शेष 90,000 का अनुदान गत 4 वर्षों से नहीं मिलने के चलते सभी के आवास पूरे नहीं हो पाए हैं। जिससे लाभार्थियों के सपनों के आशियाने पर ग्रहण लगता दिखाई दे रहा है।

मकान निर्माण से अधिक राशि किराए में

लाभार्थियों द्वारा अब अपने को ठगा हुआ सा महसूस किया जा रहा है। उन्होंने अपने पुराने मकानों को तोड़कर नए मकान का कार्य शुरु किया गया तथा इस दौरान अधिकांश लाभार्थी किराए के मकान में रहने के साथ ही कुछ अस्थाई पंडाल तंबू तान कर रह रहे हैं। जिन लाभार्थियों द्वारा मकान का कार्य शुरु किया गया उन्हें मकान की लागत से अधिक का किराया लग चुका है। जिससे उनके सपनों के आशियाने के मकान निर्माण में यदि किराए की राशि जोड़ दी जाए तो उन्हें कई अधिक नुकसान हो रहा है।

अब भी हजारों लोग प्रतीक्षा सूची में

सर्वे के पश्चात गोंदिया नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत 1555 लाभार्थियों के प्रस्ताव आवास योजना के लिए भेजे गए किंतु उनके आवास अब तक पूर्ण नहीं हो पाए हैं। जिससे केंद्र सरकार की है। घोषणा वर्ष 2022 तक सब को पक्के मकान मिलेंगे उस पर ग्रहण लगता दिखाई दे रहा है तथा इसके साथ ही अब भी हजारों लाभार्थी प्रतीक्षा सूची में अपना इंतजार कर रहे हैं।

आदिवासी विकास महामंडल धान खरीदी केंद्रों में घोटाला

उपप्रादेशिक व्यवस्थापक मुलेवार निलंबित

बुलंद गोंदिया - गोंदिया जिले के आलेवाडा व गोरे धान खरीदी केंद्रों व मिलिंग में अनियमितता व भ्रष्टाचार के चलते गोंदिया जिले के देवरी उप प्रादेशिक व्यवस्थापक आशीष मुलेवार को महाराष्ट्र राज्य आदिवासी विकास महामंडल के व्यवस्थापक संचालक पद से निलंबित किया गया है।

गौरतलब है कि गोंदिया जिले में आधारभूत धान खरीदी केंद्र जिला मार्केटिंग फेडरेशन व आदिवासी विकास महामंडल के माध्यम से की जाती है। जिसमें अनेक केंद्रों में बोगस सातबारा के आधार पर धान खरीदी दिखा कर शासन को करोड़ों रुपए का चूना लगाया जा रहा है। इसी के चलते आदिवासी विकास महामंडल में प्राप्त शिकायत के आधार पर जांच किए जाने पर देवरी के उप प्रादेशिक व्यवस्थापक आशीष मुलेवार द्वारा 2 करोड़ 72 लाख 64 हजार 81 रुपए के धान का घोटाला किए जाने का मामला साबित हुआ है। इसके साथ ही आरोपी पर धान का स्टाक ना होने वाली संस्थाओं पर कार्रवाई ना करना तथा जांच अधिकारियों पर दबाव बनाना तथा शासन की राशि का नुकसान करना आरोप आदि आरोप सिद्ध हुए हैं।

गोंदिया जिले में जिला मार्केटिंग व आदिवासी विकास महामंडल द्वारा धान खरीदी की जाती है। जिसके लिए विभाग द्वारा केंद्रों को मान्यता देकर किसानों से धान की खरीदी होती है। किन्तु जिले में दोनों महामंडल द्वारा धान खरीदी में अनियमितता किए जाने के मामले की जांच शुरु है। आदिवासी विकास महामंडल उप प्रादेशिक कार्यालय देवरी द्वारा वर्ष 2020-21 मे आलेवाडा सेंटर व 2021-22 में गोरे सेंटर को धान खरीदी का अधिकार दिया गया था, किंतु दोनों केंद्रों में केवल कागजों पर ही धान की खरीदी दिखा कर शासन को करोड़ों रुपए का चूना लगाया गया। जिसमें वर्ष 2020-21 में आलेवाडा केंद्र में 90 लाख 55 हजार 784 रुपए का 4848.58 क्विंटल धान तथा वर्ष 2021-22 में गोरे केंद्र में 1 करोड़ 82 लाख 8 हजार 297 रुपए कीमत का 9385.72 क्विंटल धान इस प्रकार दोनों केंद्रों में 2 करोड़ 72 लाख 64 हजार 81 रुपए के धान का घोटाला किया गया।

खरीदी केंद्र में धान नहीं

आदिवासी विकास महामंडल द्वारा खरीदी किए गए धान की मिलिंग के लिए प्रादेशिक व्यवस्थापक भंडारा द्वारा राइसमिलर को डीओ दिया गया। किंतु जब राइसमिलर उपरोक्त केंद्र में धान के लिए पहुंचे तो वहां पर धान था ही नहीं। जिसकी शिकायत किए जाने पर व्यवस्थापक संचालक आशीष मुलेवार द्वारा दोषी संस्थाओं पर कार्रवाई न कर भ्रष्टाचार किया गया तथा भ्रष्टाचारियों को मदद की गई। इसके साथ ही उपरोक्त कामों में मुलेवार की सहायता करने वाले तत्कालीन निरीक्षक एम.एस. इंगले, प्रतवारीकार व विपणन निरीक्षक सी.डी. जुगनाके इन तीनों पर भी पुलिस में मामला किया जाएगा।

क्लास वन अधिकारी पर कार्रवाई जिले में हड़कंप

आदिवासी विकास महामंडल के व्यवस्थापकिय संचालक क्लास वन अधिकारी पर भ्रष्टाचार का मामला दर्ज होने पर गोंदिया जिले में हड़कंप मचा हुआ है। जिले के धान घोटाले में और कितने अधिकारी सामने आते हैं, इस पर सबकी नजरें टिकी हुई है।

विजयादशमी पर्व असत्य पर सत्य की जीत का देता संदेश - वर्षा पटेल

नूतन विद्यालय में वर्षाबेन पटेल व पूर्व विधायक राजेन्द्र जैन के हस्ते कोरोना योद्धाओं का सत्कार

बुलंद गोंदिया - विजयादशमी पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक, रावण दहन भगवान श्रीराम द्वारा लंकाधिपति रावण का वध करने पर बरसों से चली आ रही धार्मिक परंपरा है। भगवान श्रीराम ने रावण का वध कर असत्य पर सत्य की जीत का संदेश दिया था। इस दिन अच्छे कार्यो का संकल्प लेकर बुराई को दूर करना ही अच्छाई की जीत है। उक्त उद्गार उद्घाटक के रुप में वर्षा प्रफुल पटेल ने दशहरा कार्यक्रम के दौरान व्यक्त किये।

श्रीमति पटेल एवं पूर्व विधायक राजेन्द्र जैन गोंदिया के मामा चौक स्थित नूतन विद्यालय में आयोजित रावण दहन के कार्यक्रम में बतौर उद्घाटक व मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित थे। इस अवसर पर मुदलियार दंपत्ति एवं हजारों की संख्या में नागरिक उपस्थित थे। रावण दहन के दौरान उपस्थित जनसैलाब ने जमकर जय श्रीराम के नारे लगाएं। आतिशबाजी से लोगो में उत्साह बना हुआ था। वर्षा पटेल एवं राजेन्द्र जैन ने सभी को दशहरा, विजयादशमी की बधाई दी।

विजयादशमी के कार्यक्रम के दौरान कोरोना संकट काल में योद्धा के रुप में उत्कृष्ट सेवा देने वाले स्वास्थ्य कर्मियों तथा पुलिस विभाग के कर्मियों का वर्षा पटेल एवं राजेन्द्र जैन के हस्ते कोरोना योद्धा के रुप में सत्कार किया गया।

कार्यक्रम में वर्षा पटेल के साथ पूर्व विधायक राजेंद्र जैन, मुदलियार दंपत्ति, अशोक नशीने, श्रीवास भंडारकर, राकेश तुरकर, दिलीप काढ़े, सरोदे साहब, संजय दुबे, कैलाश क्षीरसागर, नागेश्वर राव, अनिल शहारे, राजा देशमुख, प्रियेश मुदलियार, कमलेश नासिने, स्वप्निल, पिल्लई, आयुष क्षीरसागर, अश्विन क्षीरसागर, विक्की शुक्ला, अनिल अलुरु, अशोक अलु, राजा सूर्यवंशी, संजय सोनवाने, संदीप काटनकर, पवन परियानी, नलिन जभुलकर, शुभम गायधने, अशोक कटकवार, योगेश रामटेककर, धरम नशीने, महेश जवनिया, नवनीत आगलावे, कुणाल पांडे, लकी शुक्ला, क्षितिज कुंडोजवार, संदीप पारधी, समीर चौधरी, नंदू विश्वकर्मा, रवि राहंगडाले, महेंद्र श्रीवास, मोहित पांडे सहित आदी मान्यवर उपस्थित थे।

फ्लैगशिप योजना में गोंदिया जिला राज्य में प्रथम पांच स्थानों में हो शामिल - पालकमंत्री मुनगंटीवार

विकास के ३ सूत्रीय कार्यक्रम का कड़ाई से पालन कर निधि का करे योग्य नियोजन

बुलंद गोंदिया - गोंदिया जिले की जिला नियोजन समिति की सभा जिलाधिकारी कार्यालय के नियोजन समिति सभागृह में पालकमंत्री सुधीर मुनगंटीवार की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर पर उन्होंने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि केंद्र व राज्य सरकार द्वारा चलाई जाने वाली जन कल्याणकारी महत्वकांक्षी 13 योजनाएं शामिल है। उपरोक्त योजना को क्रियान्वयन करते समय उचित नियोजन कड़ाई से अमल में लाना व योग्य आर्थिक विनियोग इन तीन सूत्र का शासकीय यंत्रणा द्वारा कड़ाई से पालन कर फ्लैगशिप कार्यक्रम के अंतर्गत गोंदिया जिले को राज्य में प्रथम पांच स्थानों में शामिल करने का निर्देश दीया। तथा स्वास्थ्य शिक्षा कृषि रोजगार निर्माण व सिंचाई यह 5 सूत्र के आधार पर जिले के जिले को विकास की मुख्यधारा में लाने का अपना निश्चय व्यक्त किया तथा विकासात्मक योजनाओं को क्रियान्वित करते समय जनप्रतिनिधियों को विश्वास में लेकर उसका नियोजन किया जाए तथा कार्यों की गुणवत्ता बनी रहे। प्रत्येक विकास कार्यों के स्थान पर फलक लगाकर उस पर ठेकेदार का नाम नंबर व कार्य शुरु कब हुआ तथा खत्म कब होगा, निधि कितनी इन सभी विषय की जानकारी उपलब्ध हो, ऐसा कड़ा निर्देश अधिकारियों को दिया।

जिला नियोजन समिति की सभा महाराष्ट्र के वन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, मत्स्य व्यवसाय तथा पालकमंत्री गोंदिया जिला सुधीर मुनगंटीवार की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस अवसर पर सांसद सुनील मेंढे, सांसद अशोक नेते, जिला परिषद अध्यक्ष पंकज राहंगडाले, विधायक परिणय फुके, अभिजीत बंजारी, विजय राहंगडाले, विनोद अग्रवाल, मनोहर चंद्रिकापुरे, सहसराम कोरेटी, जिलाधिकारी नैयना गुंडे, मुख्य कार्यकारी अधिकारी अनिल पाटिल, जिला पुलिस अधीक्षक विश्व पानसरे, अपर जिलाधिकारी राजेश खवले, जिला नियोजन अधिकारी कावेरी नाखले, सहाक्रयक आयुक्त समाज कल्याण विनोद मोथुरे व प्रकल्प अधिकारी एकात्मिक आदिवासी विकास प्रकल्प अधिकारी विकास राचेलवर उपस्थित थे।

आगे पालकमंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, रोजगार व सिंचाई इन पंचसूत्र का नियोजन किया जाए तथा प्रत्येक कार्यालय को सुंदर व स्वच्छ होना चाहिए, प्रत्येक अधिकारी स्थिर मन से काम करने की आवश्यकता है तथा नागरिकों की प्रगति हो, प्रत्येक विभाग को अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाली योजनाओं के समाधान और समस्याओं के आधार पर प्रेजेंटेशन तैयार करने के निर्देश दिए। सिंचाई विभाग, एमआईडीसी, परिवहन, मानव विकास, लोक निर्माण, कौशल विभाग, खनिज

विकास को आदिवासी विकास विभाग को अगले 5 साल के लिए विजन दस्तावेज तैयार करने के निर्देश दिए। वन विभाग से संबंधित विभिन्न विभाग में प्रलंबित प्रस्ताव को जमा कर उसकी सूची तैयार करने के निर्देश दिए तथा इस संदर्भ में विशेष सभा लेकर उन उपरोक्त प्रस्ताव को हल करने का निर्देश दिया। एमआईडीसी संबंधित विषय में भी सभा जल्द ही ली जाएंगी, राजस्व विभाग द्वारा तैयार किए गए वन हक कानून सातबारा पट्टे व दिवाली भेंट किट का वितरणपालक मंत्री के हस्ते किया गया।

आदिवासी विभाग के अंतर्गत लाभार्थियों को दी जाने वाली कुआं योजना की समीक्षा कर विद्युत कनेक्शन मोटर की एकात्मिक योजना को तैयार करने के लिए शासन की ओर प्रस्ताव भेजने के संदर्भ में उपरोक्त सभा में मंजूरी दी गई। जिला नियोजन समिति की सभा में 30 अप्रैल 2022 के इतिवृत्त को मंजूरी दी गई तथा जिला नियोजन समिति सभा 30 अप्रैल 2022 के इतिवृत्त की कार्रवाई की समीक्षा लेने 1 अप्रैल 2023 से विभिन्न योजनाओं के लिए दी गई प्रशासकीय मान्यता का पुनर लोकन कर मान्यता देने। जिला वार्षिक योजना वर्ष 2022-23 के अंतर्गत नियोजन की समीक्षा लेने सर्वसाधारण योजना, अनुसूचित जाति उपयोजना, आदिवासी उपयोजना, आदिवासी उपयोजना क्षेत्र व अध्यक्ष की मंजूरी से समय पर लिए गए विषयों पर चर्चा की गई। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित थे तथा सभा का संचालन जिला नियोजन अधिकारी कावेरी नाखले ने किया।

इस अवसर पर जिलाधिकारी नैयना गुंडे द्वारा जिले में चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई जिसमें प्रमुख रुप से अतिवृष्टि से हुए नुकसान, नुकसान ग्रस्तों को मुआवजा, सेवा पंधरवाडा, लम्पी बीमारी, धान खरीदी, धान मिलिंग, कोविड टीकाकरण, बूस्टर डोज, सारस संवर्धन, पर्यटन विकास व भेट आपुलकी इस विषय का समावेश है।

गोंदिया से जल्द दौड़ेगी वंदे भारत ट्रेन

प्रधानमंत्री मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट में गोंदिया-रायगढ़ का नाम भी हुआ शामिल

बुलंद गोंदिया - प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट में गोंदिया-रायगढ़ का नाम भी शामिल हो गया हैं। रेल्वे आने वाले समय में छत्तीसगढ़ को दो वन्दे भारत ट्रेन देगा इसके लिए बिलासपुर और छत्तीसगढ़ से लगे गोंदिया में कोचिंग डिपो का काम शुरु हो गया है। सब से पहली ट्रेन बिलासपुर से संपर्क क्रांति रुट से दिल्ली जाएगी और दूसरी गोंदिया से चलकर रायपुर-बिलासपुर रायगढ़ होते हुये झारसुगुड़ा (ओडिशा) जायेगी। इसमें यात्रा करने का ये फायदा होगा कि जहाँ बिलासपुर से दिल्ली के लिये 18 घंटे लगते थे, अब वंदे भारत से यह सफर 14 घंटे में पूरा होगा। इसी तरह गोंदिया से चलने वाली वंदे भारत में रायपुर से सिर्फ 4 घंटे में झारसुगुड़ा पहुंच जायेगें। अभी इसमें साढ़े 6 घंटे लग रहे हैं जिससे लोगों का समय बचेगा।

अब लगभग साफ हो गया है कि छत्तीसगढ़ को दो वंतेभारत ट्रेनें मिलने की स्थिति बन गई है क्योंकि गोंदिया और बिलासपुर में केवल वंदेभारत ट्रेन के लिए 50-50 करोड़ रु. से कोचिंग डिपो बनाने का काम शुरु हो चुका हैं। वन्देभारत की स्पीड करीब 130 किमी है, रेलवे की सी आर एस टीम ने दुर्ग से झारसुगड़ा के बीच ट्रेन को 130 किमी प्रति घंटे की रयतार से चलाकर परीक्षण कर लिया है। सूत्रों के अनुसार यह ट्रायल भले ही वंदे भारत ट्रेन के लिए नहीं था, लेकिन यह साफ हो गया कि इस ट्रैक में हाई स्पीड ट्रेन आसानी से चल सकती हैं। संभावन है की यह ट्रेन मई जून के आस पास शुरु हो जायेगी कोचिंग डिपो अगले साल मई-जून तक बन कर तैयार हो जायेगा। उसके तुरंत बाद ट्रेन शुरु की जाएगी वंदेभारत के लिये कोचिंग डिपो पूरी तरह अलग रहेगा। इसमें इसके अलावा कोई दूसरी ट्रेन नहीं रखी जाएगी।

बिलासपुर और गोंदिया कोचिंग डिपो में ट्रेन की सफाई और जरुरी मरम्मत के बाद ट्रेन स्टेशन पहुंचेगी। रेलवे अफसरों ने बताया कि वंदेभारत की खासियत है कि आने वाले कुछ समय में इसकी स्पीड बढ़ाकर 160 से 180 किमी प्रतिघंटा की जा सकती है वंदे भारत ट्रेन के कोच भी अपग्रेड किए गए हैं। इसका सीटिंग अरेंजमेंट थोड़ा अलग है, इसलिए पूरे कोच में तकनीकी सुधार हुए है। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे नागपुर विभाग डीआरयूसीसी सलाहकार समिति सदस्य एवं भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा गोंदिया शहर अध्यक्ष इंजी. जसपाल सिंह चावला ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव, सांसद सुनील मेंढे एवं पूर्व विधायक गोपालदास अग्रवाल का आभार व्यक्त किया है।

संपादकीय

अनुकम्पा बनाम अधिकार

सर्वोच्च न्यायालय ने इस व्यवस्था पर विराम लगाते हुए कहा है कि अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति पाना कोई अधिकार नहीं, बल्कि रियायत है।

अनेक मामलों में देखा जाता है कि नौकरी में रहते हुए अगर किसी कर्मचारी की मृत्यु हो जाती है तो उनके परिवार का कोई सदस्य अनुकंपा के आधार पर नौकरी की मांग करने लगता है। इस आधार पर नौकरी देने का प्रावधान चूंकि सरकारी नियमावली में है और बहुत सारे लोगों को इस तरह नौकरियां मिलती भी रही हैं, इसलिए यह एक तरह से अधिकार मान लिया गया है।

मगर सर्वोच्च न्यायालय ने इस व्यवस्था पर विराम लगाते हुए कहा है कि अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति पाना कोई अधिकार नहीं, बल्कि रियायत है। ऐसी नियुक्ति का मकसद प्रभावित परिवार को अचानक आए संकट से उबारने में मदद करना है। मामला यों था कि केरल उच्च न्यायालय की खंडपीठ ने एक सरकारी कंपनी को नौकरी के दौरान हुई उसके एक कर्मचारी के मृत्यु पर उसकी बेटी को नियुक्ति देने पर पुनर्विचार करने का आदेश दिया था।

इस फैसले को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई। जिस कर्मचारी की मृत्यु हुई थी, उसकी पत्नी भी कहीं नौकरी कर रही थी। फिर, कर्मचारी की बेटी ने अपने पिता की मृत्यु के चौबीस साल बाद अनुकंपा के आधार पर नौकरी पाने का अनुरोध किया था। इसी आधार पर सर्वोच्च न्यायालय ने उसके दावे को खारिज कर दिया और कहा कि किसी की मृत्यु के चौबीस साल बाद अनुकंपा पर नौकरी पाने का अनुरोध नहीं किया जा सकता।

दरअसल, अनुकंपा के आधार पर नौकरी देने की व्यवस्था इसलिए की गई थी कि अगर किसी परिवार का एकमात्र कमाने वाले व्यक्ति की किन्हीं स्थितियों में मृत्यु हो जाती है और उस परिवार के सामने भरण-पोषण का संकट खड़ा हो जाता है, तो उसके बच्चों में से किसी को या उसकी पत्नी को उनकी योग्यता के अनुसार नौकरी देकर मदद की जाए।

यह उस परिवार को आर्थिक संकट से उबारने के लिए मानवीय आधार पर की गई व्यवस्था है, न कि किसी को अधिकार के रुप में प्रदान की गई है। अगर मृत कर्मचारी के परिवार में कोई पहले से नौकरी करता या ऐसा कोई काम करता है, जिससे परिवार का भरण-पोषण हो सकता है, तो अनुकंपा का नियम स्वतरु कमजोर पड़ जाता है।

मगर हमारे देश में चूंकि सरकारी नौकरियों की काफी कमी है, इसलिए लोग किसी भी तरह उन्हें पाने की कोशिश करते हैं। अनुकंपा आधार पर नौकरी पाना आसान लगता है, इसलिए अक्सर उस पर लोग अपना दावा ठोंकते देखे जाते हैं। फिर अनुकंपा में फैसला संबंधित विभाग के बड़े अधिकारियों को ही करना होता है, इसलिए उन्हें अपने पक्ष में करना आसान लगता है। इस तरह कई ऐसे लोग भी नौकरी पा जाते हैं, जिन पर अनुकंपा के नियम लागू नहीं होते। जिस मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने ताजा फैसला दिया, वह भी कुछ ऐसा ही था।

इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने यह भी साफ कर दिया है कि अनुच्छेद चौदह और सोलह के तहत सभी उम्मीदवारों को सभी सरकारी रिक्तियों के लिए समान अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। वास्तव में जो अनुकंपा के आधार पर नौकरी के योग्य नहीं हैं, उन्हें क्यों इसका लाभ लेने दिया जाए। इस तरह बहुत सारे योग्य लोगों का हक मारा जाता है।

यह मानवीय तकाजा है कि कंपनियों और सरकारी महकमों को संकट के समय अपने कर्मचारियों के परिवार के भरण-पोषण की चिंता होनी चाहिए। मगर यह केवल अनुकंपा आधार पर नौकरी देने से ही जाहिर नहीं होती। भविष्य निधि, विशेष सहायता कोष आदि के जरिए भी मदद पहुंचाने का प्रयास किया जाता है। नौकरी के मामले में योग्यता की रक्षा होनी चाहिए।

विश्व दृष्टि दिवस

विश्व दृष्टि दिवस (अंग्रेज़ी : World Sight Day) प्रतिवर्ष अक्टूबर महीने के दूसरे गुरुवार को मनाया जाता है। यह दिवस धुंधली दृष्टि (खराब दृष्टि) या अंधापन के साथ-साथ दृष्टि संबंधित समस्याओं के बारे में जागरुकता पैदा करने के लिए मनाया जाता है। इस दिवस का केंद्रीय बिंदु अंधेपन की रोकथाम के बारे में लक्षित दर्शकों को शिक्षित तथा विज़न 2020 एवं विज़न 2020 कार्यक्रम की गतिविधियों के बारे में सहयोग उत्पन्न करना हैं। इस वर्ष विश्व दृष्टि दिवस का विषय श्कार्रवाई करने के लिए मिलजुल कर सशक्त बनेंश है।

तेज़ी से बढ़ती नेत्रहीनता

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के एक अनुमान के अनुसार, विश्वभर में लगभग 285 मिलियन लोग नेत्रहीन हैं। इनमें से 39 लाख लोग अंधे और 246 मिलियन लोग मध्यम या गंभीर दृष्टि दोष वाले हैं। दृष्टि दोष के प्रमुख कारणों में असंशोधित अपवर्तक कमियां (43प्रतिशत) और मोतियाबिंद (33प्रतिशत) हैं। अधिकांश अंधेपन (लगभग 80 प्रतिशत) का बचाव यानि कि उपचार या रोकथाम की जा सकती है।

रोकथाम

अंधेपन की रोकथाम सभी स्वास्थ्य हस्तक्षेप में सबसे सस्ती-सुलभ एवं सफल हस्तक्षेप हैं। विश्व दृष्टि दिवस विज़न 2020 एक वैश्विक पहल है, जिसका उद्देश्य वर्ष 2020 तक टालने योग्य अंधेपन को समाप्त करना है। इसका शुभारंभ 18 फरवरी 1999 में 20 से ज्यादा अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी नेत्र देखभाल संगठनों के साथ विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा दृष्टिहीनता रोकथाम के लिए अंतरराष्ट्रीय एजेंसी, आईएपीबी के तौर पर किया गया था।

आँखों की देखभाल

आँखों के अच्छे स्वास्थ्य को कैसे बनाए रखा जा सकता हैं-

- अच्छी दृष्टि के लिए स्वस्थ आहार का सेवन करें। संतुलित आहार का सेवन करें। अपने आहार में हरी पत्तेदार सब्जियों, अंडे, फलियों एवं गाजर को अधिक से अधिक मात्रा में शामिल करें।
- धूम्रपान छोड़ें : धूम्रपान, मोतियाबिंद, ऑप्टिक एवं तंत्रिका क्षति के साथ-साथ दृष्टि से संबंधित कई तरह की समस्याओं को पैदा कर सकता है।
- सूर्य की रोशनी के प्रत्यक्ष प्रभाव को रोकने के लिए यूवी संरक्षित धूप का चश्मा पहनें, जो कि आपकी आंखों की सुरक्षा के लिए बेहतर है।
- सुरक्षा चश्मा पहनें। यदि आप कार्यस्थल पर खतरनाक पदार्थों से काम करते हैं, तो आपको अपनी आंखों की रक्षा करने के लिए सुरक्षा चश्मा अवश्य पहनना चाहिए।
- यदि आप लंबी अवधि तक कंप्यूटर पर काम करते हैं, तो यह सुनिश्चित करें, कि आप अक्सर बीच-बीच में उठेंगे, आँखों का सूखापन कम करने के लिए आँखों को अधिक से अधिक बार झपकें।
- टेलीविजन देखते या कंप्यूटर पर काम करते हुए एंटी ग्लेयर चश्मा पहनने की सलाह दी जाती है।
- मंद प्रकाश में न पढ़े। यह आँखों को होने वाली परेशानियों के प्रमुख कारणों में से एक है।
- आँखों के बेहतर स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए अपनी आँखों की नियमित जांच कराएं।
- खिड़कियों एवं लाइट द्वारा कंप्यूटर पर पड़ने वाली चकाचौंध से बचने की कोशिश करें। यदि आवश्यक हों, तो एंटी ग्लेयर स्क्रीन का उपयोग करें।
- यदि आप कॉन्टेक्ट लेंस पहनते हैं, तो उन्हें लंबी अवधि तक पहनने से बचें, कॉन्टेक्ट लेंस पहनते हुए तैराकी एवं सोने से बचें।
- अपनी आँखों को आराम देने के लिए हर बीस मिनट में बीस फीट की दूरी पर बीस सेकंड के लिए देखें।

नेत्रदान करें

आँखों के स्वास्थ्य को बनाए रखना केवल एक व्यक्ति का ही कर्तव्य नहीं है, बल्कि यह समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। नेत्रदान द्वारा बड़ी संख्या में लोगों को लाभान्वित किया जा सकता हैं। न्किसी को बेहतर दृष्टि देने के लिए आज ही अपनी आँखें दान करने की शपथ लें।

अंतरराष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस

प्रत्येक वर्ष संपूर्ण विश्व में 17 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन के रुप में मनाया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा 22 दिसम्बर 1992 को प्रत्येक वर्ष 17 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस मनाये जाने की घोषणा की गयी। इस दिवस पर विभिन्न राष्ट्रों द्वारा गरीबी उन्मूलन के लिए प्रयास, विकास एवं विभिन्न कार्यों व योजनाओं को जारी किया जाता है। यह दिवस पहली बार 1987 में फ्रांस में मनाया गया जिसमें लगभग एक लाख लोगों ने मानव अधिकारों के लिए प्रदर्शन किया था। यह आंदोलन एटीडी फोर्थ वर्ल्ड के संस्थापक जोसफ व्रेंसिकी द्वारा आरंभ किया गया। इसके अतिरिक्त गरीबी से लड़ाई सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों (एमडीजी) और नए सतत विकास लक्ष्यों के विकास के मूल में निहित है।

इस दिवस का उद्देश्य विश्व समुदाय में गरीबी दूर करने के लिए किये जा रहे प्रयासों के संबंध में जागरुकता बढ़ाना है। इस दिवस पर विभिन्न राष्ट्रों द्वारा गरीबी उन्मूलन के प्रयास, विकास एवं कार्यों व योजनाओं को जारी किया जाता है।

भारत में गरीबी दर :

केंद्र सरकार ने 2012 में बताया कि भारत में 21.9 प्रतिशत आबादी गरीबी रेखा से नीचे रहती है।

विश्व बैंक की 2011 रिपोर्ट में कहा गया कि भारत की 23.6 प्रतिशत जनसंख्या (लगभग 276 मिलियन) की प्रतिदिन क्रय शक्ति 1। 25 डॉलर प्रतिदिन है।

इसके अतिरिक्त 2016 में जारी अंतरराष्ट्रीय भुखमरी सूचकांक में भारत को 97वां स्थान मिला है। इसमें विकासशील देशों के लिए औसत दर 21.3 रखी गयी थी जबकि भारत की यह दर 28.5 प्रतिशत थी।

भारत में गरीबी एवं बेरोजगारी उन्मूलन की योजनाएं :

प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना : 2000-01

समग्र ग्रामीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रें में स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, आवास, सड़कें एवं ग्रामीण विद्युतीकरण से संबंधित विकास योजनाएं चलाना।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना : 25 दिसम्बर, 2000

योजना के प्रथम चरण में 1, 000 से अधिक आबादी वाले गांवों को अच्छी बारह मासी सड़कों से जोड़ना। दूसरे चरण में 500 से अधिक आबादी वाले गांवों को अच्छी बारह मासी सड़कों से जोड़ना एवं पहाड़ी, रेगिस्तानी एवं जनजातीय क्षेत्रें में 250 या इससे अधिक आबादी वाले गांवों को सड़कों से जोड़ना।

निर्मल भारत अभियान : 15 अगस्त, 2022

योजना के अंतर्गत खुले स्थान पर मल त्याग की प्रथा की समाप्ति एवं जीवन की गुणवत्ता में सुधार का लक्ष्य रखा गया।

राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना : अप्रैल, 2005

ग्रामीण क्षेत्रें में बिजली संबंधी आधारभूत ढांचे और घरों में बिजली उपलब्ध कराने का लक्ष्य।

भारत निर्माण योजना : 16 दिसम्बर, 2005

गांवों में आधारभूत सुविधाओं के विकास हेतु 6 क्षेत्रें - 1) सिंचाई, 2) सड़कें, 3) आवास, 4) जल आपूर्ति, 5) विद्युतीकरण, 6) दूर संचार में निर्धारित लक्ष्यों को 4 वर्षों में प्राप्त करने की योजना है।

मरुभूमि विकास योजना : 1977-78

मरुभूमि को बढ़ने से रोकने, मरुभूमि में सूखे के प्रभाव को समाप्त करने एवं प्रभावित क्षेत्र में परिस्थितिकीय संतुलन बहाल करने, भूमि की उत्पादकता बढ़ाने एवं जल संसाधनों को बढ़ाने का लक्ष्य।

स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना : 1 अप्रैल, 1999

पूर्व में प्रचलित 6 योजनाओं को इस योजना में विलय कर सहायता प्राप्त प्रत्येक परिवार को एक निश्चित अवधि में गरीबी रेखा से ऊपर उठाना था।

राष्ट्रीय ग्रामीण अजीविका मिशन : 3 जून, 2011

ग्रामीण क्षेत्रें में स्वयं सहायता समूहों को सुदृढ़ करने एवं उनके माध्यम से निर्धनों की निर्धनता के निवारण के उद्देश्य से प्रारम्भ किया गया है।

मनरेगा : 2 फरवरी, 2006

ग्रामीण बेरोजगारी, भूख और गरीबी से निजात पाने के लिए मनरेगा का शुभारम्भ प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा आन्ध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले से किया गया।

सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना : 5 सितम्बर, 2001

ग्रामीण क्षेत्रें में रोजगार के अतिरिक्त एवं सुनिश्चित अवसर उपलब्ध कराने के साथ खाद्यान्न उपलब्ध कराना भी है।

इंदिरा आवास योजना : 1985-86

ग्रामीण क्षेत्रें में आवास की सुविधा उपलब्ध कराना।

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

जयंती : १५ अक्टूबर

अबुल पकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम (अंग्रेज़ी (A.P.J. Abdul Kalam), जो मिसाइल मैन और जनता के राष्ट्रपति नाम से भी जाने जाते हैं, भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति थे। वे भारत के पूर्व राष्ट्रपति, जानेमाने वैज्ञानिक और अभियंता (इंजीनियर) के रुप में विख्यात थे। उन्होंने सिखाया जीवन में चाहें जैसे भी परिस्थिति क्यों न हो पर जब आप अपने सपने को पूरा करने की ठान लेते हैं तो उन्हें पूरा करके ही रहते हैं। अब्दुल कलाम मसऊदी के विचार आज भी युवा पीढ़ी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

इन्होंने मुख्य रुप से एक वैज्ञानिक और विज्ञान के व्यवस्थापक के रुप में चार दशकों तक रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) संभाला व भारत के नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रम और सैन्य मिसाइल के विकास के प्रयासों में भी शामिल रहे। इन्हें बैलेस्टिक मिसाइल और प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी के विकास के कार्यों के लिए भारत में शमिसाइल मैनश के रुप में जाना जाता है।

इन्होंने 1974 में भारत द्वारा पहले मूल परमाणु परीक्षण के बाद से दूसरी बार 1998 में भारत के पोखरान-द्वितीय परमाणु परीक्षण में एक निर्णायक, संगठनात्मक, तकनीकी और राजनैतिक भूमिका निभाई।

कलाम सत्तारुढ़ भारतीय जनता पार्टी व विपक्षी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दोनों के समर्थन के साथ 2002 में भारत के राष्ट्रपति चुने गए। पांच वर्ष की अवधि की सेवा के बाद, वह शिक्षा, लेखन और सार्वजनिक सेवा के अपने नागरिक जीवन में लौट आए। इन्होंने भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किये।

प्रारंभिक जीवन

15 अक्टूबर 1931 को धनुषकोडी गाँव (रामेश्वरम, तमिलनाडु) में एक मध्यमवर्ग मुस्लिम अंसार परिवार में इनका जन्म हुआ। इनके पिता जैनुलाब्दीन न तो ज्यादा पढ़े-लिखे थे, न ही पैसे वाले थे। इनके पिता मछुआरों को नाव किराये पर दिया करते थे। अब्दुल कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। परिवार की सदस्य संख्या का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि यह स्वयं पाँच भाई एवं पाँच बहन थे और घर में तीन परिवार रहा करते थे। अब्दुल कलाम के जीवन पर इनके पिता का बहुत प्रभाव रहा। वे भले ही पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन उनकी लगन और उनके दिए संस्कार अब्दुल कलाम के बहुत काम आए। पाँच वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम की पंचायत के प्राथमिक विद्यालय में उनका दीक्षा-संस्कार हुआ था। उनके शिक्षक इयादुराई सोलोमन ने उनसे कहा था कि जीवन मे सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा, आस्था, अपेक्षा इन तीन शक्तियो को भलीभाँति समझ लेना और उन पर प्रभुत्व स्थापित करना चाहिए। पांचवी कक्षा में पढ़ते समय उनके अध्यापक उन्हें पक्षी के उड़ने के तरीके की जानकारी दे रहे थे, लेकिन जब छात्रों को समझ नही आया तो अध्यापक उनको समुद्र तट ले गए जहाँ उड़ते हुए पक्षियों को दिखाकर अच्छे से समझाया, इन्ही पक्षियों को देखकर कलाम ने तय कर लिया कि उनको भविष्य में विमान विज्ञान में ही जाना है। कलाम के गणित के अध्यापक सुबह ट्यूशन लेते थे इसलिए वह सुबह 4 बजे गणित की ट्यूशन पढ़ने जाते थे।

अब्दुल कलाम ने अपनी आरंभिक शिक्षा जारी रखने के लिए अख़बार वितरित करने का कार्य भी किया था। कलाम ने 1950 में मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलजी से अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। स्नातक होने के बाद उन्होंने हावरक्राफ्ट परियोजना पर काम करने के लिये भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान में प्रवेश किया। 1962 में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में आये जहाँ उन्होंने सफलतापूर्वक कई उपग्रह प्रक्षेपण परियोजनाओं में अपनी भूमिका निभाई। परियोजना निदेशक के रुप में भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान एसएलवी 3 के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे जुलाई 1982 में रोहिणी उपग्रह सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया था।

वैज्ञानिक जीवन

1972 में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन से जुड़े। अब्दुल कलाम को परियोजना महानिदेशक के रुप में भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह (एस.एल.वी. तृतीय) प्रक्षेपास्त्र बनाने का श्रेय हासिल हुआ। 1980 में इन्होंने रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के निकट स्थापित किया था। इस प्रकार भारत भी अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब का सदस्य बन गया। इसरो लॉन्च व्हीकल प्रोग्राम को परवान चढ़ाने का श्रेय भी इन्हें प्रदान किया जाता है। कलाम ने स्वदेशी लक्ष्य भेदी नियंत्रित प्रक्षेपास्त्र (गाइडेड मिसाइल्स) को डिजाइन किया। इन्होंने अग्नि एवं पृथ्वी जैसे प्रक्षेपास्त्रों को स्वदेशी तकनीक से बनाया था। कलाम जुलाई 1992 से दिसम्बर 1999 तक रक्षा मंत्री के विज्ञान सलाहकार तथा सुरक्षा शोध और विकास विभाग के सचिव थे। उन्होंने रणनीतिक प्रक्षेपास्त्र प्रणाली का उपयोग आग्नेयास्त्रों के रुप में किया। इसी प्रकार पोखरण में दूसरी बार परमाणु परीक्षण भी परमाणु ऊर्जा के साथ मिलाकर किया। इस तरह भारत ने परमाणु हथियार के निर्माण की क्षमता प्राप्त करने में सफलता अर्जित की। कलाम ने भारत के विकासस्तर को 2020 तक विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधुनिक करने के लिए एक विशिष्ट सोच प्रदान की। यह भारत सरकार के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार भी रहे। 1982 में वे भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संस्थान में वापस निदेशक के तौर पर आये और उन्होंने अपना सारा ध्यान गाइडेड मिसाइल के विकास पर केन्द्रित किया। अग्नि मिसाइल और पृथ्वी मिसाइल का सफल परीक्षण का श्रेय काफी कुछ उन्हीं को है। जुलाई 1992 में वे भारतीय रक्षा मंत्रालय में वैज्ञानिक सलाहकार नियुक्त हुये। उनकी देखरेख में भारत ने 1998 में पोखरण में अपना दूसरा सफल परमाणु परीक्षण किया और परमाणु शक्ति से संपन्न राष्ट्रों की सूची में शामिल हुआ।

राष्ट्रपति

राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। इन्हें भारतीय जनता पार्टी समर्थित एनडीए घटक दलों ने अपना उम्मीदवार बनाया था जिसका वामदलों के अलावा समस्त दलों ने समर्थन किया। 18 जुलाई 2002 को कलाम को नब्बे प्रतिशत बहुमत द्वारा भारत का राष्ट्रपति चुना गया था और इन्हें 25 जुलाई 2002 को संसद भवन के अशोक कक्ष में राष्ट्रपति पद की शपथ दिलाई गई। इस संक्षिप्त समारोह में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, उनके मंत्रिमंडल के सदस्य तथा अधिकारीगण उपस्थित थे। इनका कार्याकाल 25 जुलाई 2007 को समाप्त हुआ। अब्दुल कलाम व्यक्तिगत जन्दिगी में बेहद अनुशासनप्रिय थे। यह शाकाहारी थे। इन्होंने अपनी जीवनी विंग्स ऑफ फायर भारतीय युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करने वाले अंदाज में लिखी है। इनकी दूसरी पुस्तक गाइडिंग सोल्स- डायलॉग्स ऑफ द पर्पज ऑफ लाइफ आत्मिक विचारों को उदृघाटित करती है इन्होंने तमिल भाषा में कविताऐं भी लिखी हैं। यह भी ज्ञात हुआ है कि दक्षिणी कोरिया में इनकी पुस्तकों की काफी माँग है और वहाँ इन्हें बहुत अधिक पसंद किया जाता है।

राष्ट्रपति दायित्व से मुक्ति के बाद

कार्यालय छोड़ने के बाद, कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलोंग, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद, भारतीय प्रबंधन संस्थान इंदौर व भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर के मानद फैलो, व एक विजिटिंग प्रोफेसर बन गए। भारतीय अन्तरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुवनंतपुरम के कुलाधिपति, अन्ना विश्वविद्यालय में एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के प्रोफेसर और भारत भर में कई अन्य शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों में सहायक बन गए। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और अन्ना विश्वविद्यालय में सूचना प्रौद्योगिकी, और अंतरराष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान हैदराबाद में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पढ़ाया।

मई 2012 में, कलाम ने भारत के युवाओं के लिए एक कार्यक्रम, भ्रष्टाचार को हराने के एक केंद्रीय विषय के साथ, मैं आंदोलन को क्या दे सकता हूँ? का शुभारंभ किया। उन्होंने यहाँ तमिल कविता लिखने और वेन्नई नामक दक्षिण भारतीय स्ट्रिंग वाद्य यंत्र को बजाने का भी आनंद लिया।

कलाम कर्नाटक भक्ति संगीत हर दिन सुनते थे और हिंदू संस्कृति में विश्वास करते थे। इन्हें 2003 व 2006 में ष्एमटीवी यूथ आइकन ऑफ़ द इयरष के लिए नामांकित किया गया था।

20141 में आई हिंदी फिल्म आई एम कलाम में, एक गरीब लेकिन उज्ज्वल बच्चे पर कलाम के सकारात्मक प्रभाव को चित्रित किया गया। उनके सम्मान में वह बच्चा छोटू जो एक राजस्थानी लड़का है खुद का नाम बदल कर कलाम रख लेता है। 2011 में, कलाम की कुडनकुलम परमाणु संयंत्र पर अपने रुख से नागरिक समूहों द्वारा आलोचना की गई। इन्होंने ऊर्जा संयंत्र की स्थापना का समर्थन किया। इन पर स्थानीय लोगों के साथ बात नहीं करने का आरोप लगाया गया।

इन्हें एक समर्थ परमाणु वैज्ञानिक होने के लिए जाना जाता है पर संयंत्र की सुरक्षा सुविधाओं के बारे में इनके द्वारा उपलब्ध कराए गए आश्वासनों से नाखुश प्रदर्शनकारी इनके प्रति शत्रुतापूर्ण थे।

निधन

27 जुलाई 2015 की शाम अब्दुल कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलोंग में श्रहने योग्य ग्रहश पर एक व्याख्यान दे रहे थे जब उन्हें जोरदार कार्डियक अरेस्ट (दिल का दौरा) हुआ और ये बेहोश हो कर गिर पड़े। लगभग 6.30 बजे गंभीर हालत में इन्हें बेथानी अस्पताल में आईसीयू में ले जाया गया और दो घंटे के बाद इनकी मृत्यु की पुष्टि कर दी गई। अस्पताल के सीईओ जॉन साइलो ने बताया कि जब कलाम को अस्पताल लाया गया तब उनकी नब्ज और ब्लड प्रेशर साथ छोड़ चुके थे। अपने निधन से लगभग 9 घण्टे पहले ही उन्होंने ट्वीट करके बताया था कि वह शिलोंग आईआईएम में लेक्चर के लिए जा रहे हैं।

कलाम अक्टूबर 2015 में 84 साल के होने वाले थे। मेघालय के राज्यपाल वी. षडमुखनाथनय अब्दुल कलाम के हॉस्पिटल में प्रवेश की खबर सुनते ही सीधे अस्पताल में पहुँच गए। बाद में षडमुखनाथन ने बताया कि कलाम को बचाने की चिकित्सा दल की कोशिशों के बाद भी शाम 7.45 पर उनका निधन हो गया।

अंतिम संस्कार

मृत्यु के तुरंत बाद कलाम के शरीर को भारतीय वायु सेना के हेलीकॉप्टर से शिलांग से गुवाहाटी लाया गया। जहाँ से अगले दिन 28 जुलाई को पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम का पार्थिव शरीर मंगलवार दोपहर वायुसेना के विमान सी-130जे हरक्यूलिस से दिल्ली लाया गया। लगभग 12.15 पर विमान पालम हवाई अड्डे पर उतरा। सुरक्षा बलों ने पूरे राजकीय सम्मान के साथ कलाम के पार्थिव शरीर को विमान से उतारा। वहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल व तीनों सेनाओं के प्रमुखों ने इसकी अगवानी की और कलाम के पार्थिव शरीर पर पुष्पहार अर्पित किये।

इसके बाद तिरंगे में लिपटे कलाम के पार्थिव शरीर को पूरे सम्मान के साथ, एक गन कैरिज में रख उनके आवास 10 राजाजी मार्ग पर ले जाया गया। यहाँ पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी, राहुल गांधी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव सहित अनेक गणमान्य लोगों ने इन्हें श्रद्धांजलि दी। भारत सरकार ने पूर्व राष्ट्रपति के निधन के मौके पर उनके सम्मान के रुप में सात दिवसीय राजकीय शोक की घोषणा की।

29 जुलाई की सुबह वायुसेना के विमान सी-130जे से भारतीय ध्वज में लिपटे कलाम के शरीर को पालम एयर बेस पर ले जाया गया जहां से इसे मदुरै भेजा गया। एक संक्षिप्त समारोह के बाद कलाम के शरीर को एक वायु सेना के हेलिकॉप्टर में मंडपम भेजा गया। मंडपम से कलाम के शरीर को उनके गृह नगर रामेश्वरम एक आर्मी ट्रक में भेजा गया। अंतिम श्रद्धांजलि देने के लिए उनके शरीर को स्थानीय बस स्टेशन के सामने एक खुले क्षेत्र में प्रदर्शित किया गया ताकि जनता उन्हें आखिरी श्रद्धांजलि दे सके।

30 जुलाई 2015 को पूर्व राष्ट्रपति को पूरे सम्मान के साथ रामेश्वरम के पी करुम्बु ग्राउंड में दफ़ना दिया गया। प्रधानमंत्री मोदी, तमिलनाडु के राज्यपाल और कर्नाटक, केरल और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्रियों सहित 3, 50, 000 से अधिक लोगों ने अंतिम संस्कार में भाग लिया।

पुरस्कार एवं सम्मान

कलाम के 79 वें जन्मदिन को संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्व विद्यार्थी दिवस के रुप में मनाया गया था। इसके आलावा उन्हें लगभग चालीस विश्वविद्यालयों द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधियाँ प्रदान की गयी थीं भारत सरकार द्वारा उन्हें 1981 में पद्म भूषण और 1990 में पद्म विभूषण का सम्मान प्रदान किया गया जो उनके द्वारा इसरो और डीआरडीओ में कार्यों के दौरान वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिये तथा भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार के रुप में कार्य हेतु प्रदान किया गया था।

1997 में कलाम साहब को भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारतरत्न प्रदान किया गया जो उनके वैज्ञानिक अनुसंधानों और भारत में तकनीकी के विकास में अभूतपूर्व योगदान हेतु दिया गया था।

वर्ष 2005 में स्विट्ज़रलैंड की सरकार ने कलाम के स्विट्ज़रलैंड आगमन के उपलक्ष्य में 26 मई को विज्ञान दिवस घोषित किया। नेशनल स्पेस सोशायटी ने वर्ष 2013 में उन्हें अंतरिक्ष विज्ञान सम्बंधित परियोजनाओं के कुशल संचलन और प्रबंधन के लिये वॉन ब्राउन अवार्ड से पुरस्कृत किया।

साभार : विकिपीडिया

माँ वीणाधारिनी नवयुवक शारदोत्सव द्वारा आयोजित माँ पार्वती ग्रुप के

जागरण ने रसिकों का मन मोहा

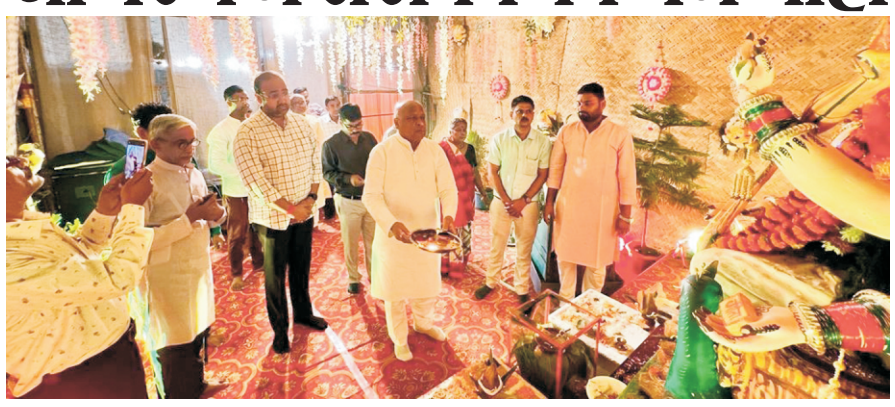

बुलंद गोंदिया - माँ पार्वती ग्रुप डोंगरगांव के गायक कलाकारों ने संगीतमय मां भगवती जागरण में अपनी विविध प्रस्तुतियों से परमात्मा एक नगर वासियों का मन मोह लिया। यहाँ की छत्रपति कालोनी में माँ वीणाधारिनी नवयुवक शारदोत्सव समिति द्वारा शारदोत्सव के अंतर्गत गुरुवार की रात्रि यह आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें पूर्व विधायक गोपालदास अग्रवाल व उनके पुत्र प्रफुल अग्रवाल ने भेंट देकर माताराणी शारदा की पूजा आराधना की तथा उपस्थितों को शारदोत्सव की शुभकामनाएँ देते हुए आयोजकों के सद्प्रयासों की सराहना कर कलाकारों को बधाई दी। इस समय वरिष्ठ कवि पत्रकार शशि तिवारी, हेल्पिंग ग्रुप के मोरेश्वर वैद्य, भरत राहांगडाले, राधेश्याम राहांगडाले, रवि गायधने, प्रीतलाल लांजेवार, उमेश टेंभरे, सुरेन्द्र जायसवाल, आर.आर. मिश्रा, उदाराम शेंडे, दीनदयाल मेश्राम, कौशिक मस्करे, वीशु राहांगडाले के साथ अन्य मान्यवर उपस्थित थे।

शारदोत्सव समिति द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया। माँ पार्वती ग्रुप के कलाकारों ने लगभग तीन घंटे तक अपनी मोहक आवाज व मधुरिम संगीत से दर्शक श्रोताओं में समा बनाए रखा। साथ ही शास्त्रीय नृत्य, वीर हनुमान, माँ काली, माँ महिषासुरमर्दिनी की जीवंत झांकियों से सभी का मन मोह लिया। ग्रुप के मुख्य गायक कलाकार रामूभैया ठाकुर, अमित राजा, मीनाक्षी बोपचे, पूजा पाठक को आरगन पर गुलशन पवार, पैड पर मनोज बोरकर, ढोलक पर विलास ठाकुर, पंजाबी ढोल पर शुभम् राठौर, संचालक सचिन बोपचे, आयोजक गौरी बोपचे, नृत्य कलाकार प्रीतम शेंडे ने संगति एवं सहयोग प्रदान किया. साऊंड सुदाम का था. संदीप राहांगडाले ने माना। 3 अक्टूबर को दोपहर में हवन व रात्रि में महाप्रसाद का लाभ श्रध्दालुओं ने उठाया। समिति के सभी सदस्यों ने सफलतार्थ सहयोग किया।

तंबाकू और तंबाकू उत्पाद स्वास्थ्य के लिए हानिकारक - राजेश खवले

बुलंद गोंदिया - तंबाकू और तंबाकू उत्पाद स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। इस बात का पता चलने पर भी देखा जाता है कि इस तरह के खाद्य पदार्थों का बड़ी मात्रा में सेवन किया जा रहा है। अपर जिलाधिकारी राजेश खवले ने अपील की कि यह मामला स्वास्थ्य की दृष्टि से खतरनाक है और बेहतर सामाजिक स्वास्थ्य के लिए नागरिकों को नशे से दूर रहना चाहिए। कोटपा अधिनियम 2003 के तहत त्रैमासिक समीक्षा बैठक अपर जिलाधिकारी राजेश खवले की अध्यक्षता में हुई। राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम गोंदिया जिला नियंत्रण एवं समन्वय समिति की त्रैमासिक समीक्षा बैठक कोटपा अधिनियम 2003 के संबंध में जिले में दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे तम्बाकू एवं तम्बाकू उत्पादों के सेवन के दुष्परिणामों को जानने के लिए आयोजित की गई थी।

इस अवसर पर अपर कलेक्टर राजेश खावले, जिला सर्जन डॉ. अमरीश मोहबे, डॉ. अनिल अटे जिला मुख स्वास्थ्य अधिकारी एवं जिला सलाहकार समिति सदस्य, चिकित्सा अधिकारी, दंत शल्य चिकित्सक एवं समिति के अन्य सदस्य उपस्थित थे। उक्त समीक्षा बैठक में कोटपा अधिनियम 2003 की विस्तृत जानकारी दी गयी और विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर कोटपा अधिनियम को प्रभावी ढंग से लागू करने के निर्देश दिये गये। कोटपा अधिनियम 2003 के तहत धारा 4 सार्वजनिक स्थानों पर तंबाकू और तंबाकू उत्पादों के सेवन पर रोक लगाती है, धारा 5 तंबाकू और तंबाकू उत्पादों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष विज्ञापन पर प्रतिबंध लगाती है, धारा 6 (ए) नाबालिगों को तंबाकू उत्पादों की बिक्री को दंडनीय अपराध बनाती है और धारा 6 (बी) शिक्षण संस्थानों के परिसरों में धारा 7 के अनुसार तम्बाकू उत्पादों की बिक्री का निषेध और धारा 7 के अनुसार तम्बाकू और तम्बाकू उत्पादों के वेस्ट पर खतरे की सूचना देनाअनिवार्य है।

अस्पताल, स्कूल, कॉलेज, बस स्टॉप, सरकारी-गैर सरकारी कार्यालयों आदि जैसे सार्वजनिक स्थानों पर तंबाकू और तंबाकू से संबंधित उत्पादों (खर्रा, गुटखा, पान मसाला आदि) का सेवन या बिक्री करते पाए जाने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी. स्कूलों और अस्पतालों के 100 गज की दूरी बैठक में आने के निर्देश दिए गए।

विश्व खाद्य दिवस

विश्वभर में प्रतिवर्ष 16 अक्टूबर को विश्व खाद्य दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष इस दिवस का विषय हमारे कार्य हमारे भविष्य हैं के विषय के साथ जीरो हंगर है।

विश्व खाद्य दिवस का इतिहास

संयुक्त राष्ट्र ने 16 अक्टूबर, 1945 को रोम में खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) की स्थापना की। संसार में व्याप्त भुखमरी के प्रति लोगों में जागरुकता फैलाने एवं इसे खत्म करने के लिए 1980 से 16 अक्टूबर को विश्व खाद्य दिवस का आयोजन शुरु किया गया। इसके अतिरिक्त वर्ल्ड फूड प्रोग्राम और अंतर्राष्ट्रीय कृषि विकास कोष द्वारा भी इसे व्यापक रुप से मनाया जाता है।

विश्व खाद्य दिवस का उद्देश्य

- विश्व के सभी लोगो को भोजन अथवा खाने के प्रति जागरुक करना इस दिवस के माध्यम से लोगो कम से कम खाना वेस्ट करने से रोकना है। इसके अतिरिक्त अन्य उद्देश्यों मे निम्नलिखित उद्देश्य शामिल हैं-
- सभी राष्ट्रों में भूख, कुपोषण एवं गरीबी के खिलाफ संघर्ष करने के लिए जागरुकता एवं प्रोत्साहन प्रसारित करना।
- कृषि विकास पर ध्यान केंद्रित करना।
- कृषि खाद्य उत्पादन को बढ़ावा देना।
- अधिकांश विकासशील देशों के बीच आर्थिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देना।
- ग्रामीण लोगों मुख्यत: महिलाओं एवं कम विशेषाधिकार प्राप्त लोगों को उनके योगदान करने के लिए प्रेरित करना।
- विकासशील देशों के बीच प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा देना।

2022 की थीम : सुरक्षित भोजन, बेहतर स्वास्थ्य

अन्य विवरण

- जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए कुछ उपाय।
- प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग ध्यानपूर्वक करें।
- कभी खाना बर्बाद न करें, उसे जरुरतमंदों के साथ बांटें।
- हरियाली बढ़ाने के लिए नए पेड़ लगाएं।
- प्लास्टिक को न कहें। प्लास्टिक की थैलियों के बजाए पुन: प्रयोज्य शॉपिंग बैग एवं बोतलों का उपयोग करें।
- कागज रहित हो जाएं। जहां भी संभव हों, डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करें।
- हमेशा ऊर्जा एवं पानी के कुशल उपकरणों का उपयोग करें।
- जैविक खाद्य पदार्थों को प्राथमिकता दें।

जश्ने ईदमिलादुन्नबी लब्बैक या रसूल अल्लाह की सदाओं से गूंज उठा गोंदिया

बुलंद गोंदिया - पूरी दुनिया में अमन चैन और खुशहाली का पैगाम लेकर गरीब, लाचार, अन्यायग्रस्तों, बेटीयों, महिलाओ के हक के लिए इंसानियत की राह दिखाने वाले इस्लाम धर्म के अव्वल व आखिरी नबी हजरत मोहम्मद सलल्लाहो व आलेही वसल्लम के 12 रबीऊल अव्वल के यौमे विलादत के खास दिनी मौके पर ईद मिलादुन्नबी का जश्न मनाकर पूरे जिले में लब्बैक या रसूल अल्लाह की सदायें गूंजती रही।

गोंदिया शहर में मरकजी सीरतुन्नबी कमेटी के जेरेपरस्ती व निगरानी में 9 अक्टूबर को पैगम्बरे इस्लाम मोहम्मद साहब की विलादत पर बड़े जलसे का आयोजन कर जुलूस-ए-मोहम्मदियाँ निकाला गया, जो पूरे शहर में अपने आका, रसूल की आमद पर नारों की सदाओं के साथ झूमते-गाते, गुनगुनाते हुए चौक-चौराहों, मुख्य रास्तों, गली-कूचों से गुजरता गया।

जुलूस-ए-महोम्मदी की शुरुवात के पूर्व सभी मस्जिदों में सुबह सादिक के वक्त नमाजे फजर अदा कर परचम कुशाई की गई एवं पैगम्बरे इस्लाम मोहम्मद मुस्तफा स.अ.व. की पैदाइश पर सलातो सलाम का नजराना पेश किया गया। जुलूस-ए -मोहम्मदी की शुरुवात गोंदिया शहर के ईदगाह मैदान से की गई, जहां शहर की सभी मस्जिदों के खतिबो इमाम, उलमायें किराम, मस्जिदों के सदर, अराकिने कमेटी, मुस्लिम इदारों के सदर, मुस्लिम जमात के सदर, मरकजी सीरतुन्नबी कमेटी के सदर व कमेटी मेम्बरान तथा हजारों की संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग उपस्थित रहें। खतिबो इमाम के हाथों इस्लाम के परचम को फहराया गया तथा तकरीर, नात ख्वानी कर मुहम्मद स.अ.व. पर दरुदों सलाम पेश किया गया।

सरकार की आमद पर पूरे शहर को सब्ज पताकाओं से, लाइटिंग, आकर्षक गेट लगाकर सजाया गया। अनेक मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में इस्लामिक झांकिया बनायी गई। जुलूस के दौरान जगह-जगह मुस्लिम समुदाय के लोगों द्वारा एवं अन्य समाज बंधुओं द्वारा मिठाई, शरबत, फल, नाश्ते के इंतेजाम किये गए। सभी ने एक-दूसरे को मोहम्मद साहब की पैदाइश पर मुबारक बाद देकर खुशी का इजहार किया। मुहम्मद स.अ.व. की यौमे विलादत की पूर्व संध्या से ही शहर के मुस्लिम क्षेत्रो में, मस्जिदों में मजहबी कार्यक्रम, इबादत, महफिले मिलाद चलती रही। हर घर में इस्लाम का परचम व रोशनाई कर मुस्लिम समाज बंधुओं ने अपने नबी की पैदाइश पर खुशी जाहिर की। जुलूस की समाप्ति शहर के सुभाष स्कूल ग्राऊंड में हुई, जिसके बाद सुभाष स्कूल ग्राऊंड एवं रामनगर बाजार चौक में आम लंगर का आयोजन किया गया।

दवा या जहर

कोई भी व्यक्ति बीमार होने पर चिकित्सक की सलाह से दवा इसलिए लेता है, ताकि वह स्वस्थ हो सके। लेकिन अगर दवा लेने के बाद उसका रोग और गंभीर अवस्था में पहुंच जाए या फिर उसकी जान तक चली जाए तो यह दवाओं के निर्माण से लेकर कारोबार तक पर एक गंभीर सवाल है।

पश्चिम अफ्रीका के गांबिया में कम से कम छियासठ बच्चों की जान इसलिए चली गई कि उन्हें खांसी होने पर एक कफ सिरप पिलाया गया था। यह दवा हरियाणा के सोनीपत में स्थित एक कंपनी में बनी थी। इससे बड़ी विडंबना क्या होगी कि अभिवावकों ने अपने बीमार बच्चों की तबीयत ठीक करने के लिए वह दवा पिलाई होगी, मगर इसकी कीमत उन्हें उनकी जिंदगी गंवा कर चुकानी पड़ी। अगर यह महज किसी लापरवाही का मामला है तो दवा बनाने वाली किसी कंपनी को क्या इस आधार पर कोई छूट दी जा सकती है?

शुरुआती प्रतिक्रिया में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस मसले पर गंभीर रुख अख्तियार किया और संबंधित खांसी की दवा सहित गांबिया में चित्रित की गई उन दवाओं के इस्तेमाल के खिलाफ चेतावनी जारी की, जिनकी वजह से छियासठ बच्चों के गुर्दे खराब हो गए और आखिरकार उनकी जान चली गई।

इस मसले पर डब्लूएचओ ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि खांसी की ये कुछ दवाएं इंसान के लिए जहर की तरह हैं। डब्लूएचओ की चेतावनी के बाद केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने जांच के आदेश जारी कर दिए हैं। सवाल है कि किसी दवा के निर्माण और निर्यात या फिर देश में ही किसी मरीज के उपयोग से पहले क्या दवाओं की जांच की कोई व्यवस्था नहीं है, ताकि ऐसी त्रासद घटना को होने से रोका जा सके?

दरअसल, शायद यह मामला दबा रह जाता अगर इतनी बड़ी तादाद में बच्चों की जान जाने की घटना किसी बाहरी देश में नहीं हुई होती और डब्लूएचओ ने इस पर सख्त रवैया नहीं अपनाया होता। देश या विदेशों में कहां-कहां इस तरह की लापरवाही की वजह से कितने लोग अपनी सेहत पर कैसा दुष्प्रभाव झेलते हैं या फिर बीमारी से छुटकारे की भूख में जान गंवा बैठते हैं, यह ठीक से पता भी नहीं चल पाता।

क्या इस घटना को महज दवा के असर से हुई मौतों के तौर पर देखा जाएगा या फिर इसे किसी हत्याकांड की तरह भी बरता जाना चाहिए? आखिर बच्चों के बीमार होने के बाद भरोसे की वजह से ही वह दवा दी गई होगी। इस भरोसे के उलट गुर्दे खराब होने के साथ छियासठ बच्चों की मौत का जिम्मेदार किसे माना जाना चाहिए?

किसी भी दवा के निर्माण से लेकर खुले बाजार में आने से पहले एक लंबी प्रक्रिया होती है, जिसमें कई स्तरों पर परीक्षण के बाद ही उसे मरीजों के आम उपयोग के लिए जारी किया जाता है। लेकिन हालत यह है कि किस दवा को चिकित्सीय परीक्षण की किस प्रक्रिया से गुजारा गया और उसके क्या परिणाम रहे, इसका ब्योरा आम लोगों की पहुंच में नहीं होता।

हर दवा में इस्तेमाल रसायनों का कोई न कोई असर होता है। कई बार ऐसा भी हो सकता है कि कोई रसायन बीमारी को ठीक करने के साथ-साथ शरीर के किसी अन्य हिस्से को गंभीर नुकसान पहुंचा दे या फिर जानलेवा साबित हो। इसलिए जब तक कोई दवा दुष्प्रभाव के लिहाज से सौ फीसद सुरक्षित साबित न हो, तब तक उसके आम इस्तेमाल की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए।

अगर किसी कंपनी की दवा या टीके से दुष्प्रभाव के मामले सामने आते हैं या फिर किसी की मौत होती है तो कंपनी सहित उसके उपयोग की सलाह देने वाले चिकित्सक को भी जिम्मेदार माना जाना चाहिए और उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए।

बढ़ते मानसिक विकार कर रहे जिंदगी तबाह

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस विशेष : १० अक्टूबर २०२२

मनुष्य का जीवन बहुत सुंदर और सादा है, बस मनुष्य ने समाधानी और परोपकारी होना चाहिए। आज के आधुनिक युग में सभी प्रतिस्पर्धा में भाग रहे है, सबको जल्द आगे निकलना है उसी प्रयास में सभी लगे रहते है। यांत्रिक संसाधनों का अति प्रयोग, प्रकृति का अत्यधिक दोहन पृथ्वी का संतुलन बिगाड़ रहा है, जिसका सीधा असर मानव जीवन पर होता है। प्रकृति मनुष्य की जरुरत पूरी कर सकती है, लालच नहीं। ऐसे माहौल में प्रदूषण, शोर, मिलावटखोरी, अनिद्रा, निकृष्ट खाद्य, संस्कारहीन व्यवहार, अनुशासनहीनता, नशा, झूठा दिखावा, लापरवाही मनुष्य के शरीर के साथ उसके मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा आघात करती है। आज समाज में महंगाई, बेरोजगारी, आर्थिक असमानता, भेदभाव, भ्रष्टाचार, गरीबी जैसी समस्या जीवन में संघर्ष तेज कर रही है। लंबे समय तक संघर्ष, हिंसा और सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थिति पूरी आबादी को प्रभावित करती है, जिससे बेहतर कल्याण की दिशा में प्रगति को खतरा उत्पन्न होता है। दुनियाभर में तेजी से मानसिक विकार बढ़ रहे है, जिसमें ज्यादातर हम खुद ही जिम्मेदार है, आधुनिक जीवनशैली और हमारा व्यवहार मानसिक विकारों को बढ़ा रहा है। हर साल 10 अक्टूबर विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस दुनियाभर में बढ़ते मानसिक विकारों के बारे में जागरुकता फैलाने हेतु मनाया जाता है। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस 2022 की थीम- सभी के लिए मानसिक स्वास्थ्य को वैश्विक प्राथमिकता बनाएं, यह है।

मानसिक विकारों के लक्षण

आजकल अक्सर देखा जाता है कि जिन गतिविधियों को व्यक्ति पहले खुशी-खुशी करता था, जिन दोस्तों-रिश्तेदारों के साथ वह समय बिताता था, आज उन्हीं लोगों से वह व्यस्तता का बहाना करके दूर भागता है। अपने पुराने शौक, खेलकूद, अच्छी हेल्दी आदतें मनुष्य भूल रहा है। लक्ष्यहीन जीवन, यांत्रिक उपकरण, इंटरनेट, चटोरी जुबान मनुष्य को बीमार कर रही है। अनियंत्रित भावनाएं, रुचि कम होना, नींद में बदलाव, कमजोरी, सुस्ती, उत्साह व आत्मविश्वास की कमी, भूख या वजन में परिवर्तन, उदासी या चिड़चिड़ापन, मूड में अत्यधिक परिवर्तन, अपनों से दूरी बनाना, धैर्य व सहनशीलता की कमी, अकेलापन महसूस, नशाखोरी, लगातार नकारात्मक सोच-विचार, हमेशा दोष ढूंढना, लगातार बेचौनी, किसी तरह का खुद पर दबाव महसूस करना, क्रियाकलापों से दूरी बनाना, हमेशा खोये-खोये रहना यह सब बातें मानसिक विकार की ओर इशारा करती है।

देश में मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति

ग्लोबल हेल्थ सिक्योरिटी इंडेक्स 2021 के अनुसार, भारत 195 देशों में से 66 वें स्थान पर है। वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य बोझ का लगभग 15 प्रतिशत भारत में है। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2016 अनुसार, भारत की लगभग 14 प्रतिशत आबादी को सक्रिय मानसिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप की आवश्यकता है। लैंसेट, 2019 सर्वेक्षण के अनुसार लगभग सात भारतीयों में से एक अलग-अलग गंभीरता के मानसिक विकार से पीड़ित है। 56 मिलियन भारतीय अवसाद से पीड़ित हैं और 38 मिलियन किसी न किसी चिंता विकार से पीड़ित हैं। हर साल लगभग 1, 64, 000 भारतीय अपनी जान लेते हैं। आज भारत में हर तीन में से एक व्यक्ति डिप्रेशन की राह पर है। यूनिसेफ और गैलप 2021 सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में बच्चे मानसिक तनाव की स्थिति में सहयोग लेने में हिचकिचाते हैं। भारत में, राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान के आंकड़ों के अनुसार, 80 प्रतिशत से अधिक लोग कई कारणों से मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक नहीं पहुंच पाते हैं, जिनमें ज्ञान की कमी, समाज का डर और देखभाल की उच्च लागत शामिल है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, भारत का मानसिक स्वास्थ्य कार्यबल गंभीर रुप से कम है। इंडियन जर्नल ऑफ साइकेट्री में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में प्रति 1,00,000 लोगों पर केवल 0.75 मनोचिकित्सक हैं। एनसीबीआई की रिपोर्ट है कि 1.3 बिलियन से अधिक की आबादी के लिए, भारत में 9,000 मनोचिकित्सक, 2,000 मनोरोग नर्स, 1,000 नैदानिक मनोवैज्ञानिक और 1,000 मनोरोग सामाजिक कार्यकर्ता हैं। किशोरों और युवा वयस्कों में मनोदशा संबंधी विकारों और आत्महत्या से संबंधित परिणामों की दर में काफी वृद्धि हुई है, और इसके लिए सोशल मीडिया काफी हद तक जिम्मेदार हो सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य सुदृढ़ बनाने के लिए

मन को हमेशा प्रसन्न रखने के लिए काम के व्यस्तता के बाद भी रोज खुद को समय देना सीखें, हमेशा स्वास्थ्यकर खाना खाएं, जुबान को जो पसंद आये वो नहीं। बेकार विचारों को अपने मस्तिष्क में जगह न दें, सकारात्मक विचारशक्ती के लोगों के साथ रहें। परोपकार की भावना रखें, हेल्दी हॉबी रखें, पालतू जानवरों के साथ समय बिताएं, पसंदीदा संगीत सुनें, पशु-पक्षी, असहायों की मदद और निस्वार्थ भाव से समाजसेवा करें। सक्रिय बने रहें, भरपूर नींद लें, दयालु बनें, रोज व्यायाम करें, अकेलेपन में न रहें, सोशल मीडिया और टीवी का सीमित उपयोग करें, लोगों से मिले-जुले, अपनों से बातें करें, बड़ो का सम्मान करें, बुरी आदतों से दूर रहें, गुस्से में अनुचित निर्णय लेने से बचें। आधुनिक जीवनशैली से दुरी बनाकर प्रकृति से जुड़े। जीवन में अनुशासन बनाए, खाना और सोना समय पर होना चाहिए। झूठे दिखावे, स्वार्थ और बहकावे में आकर में जीवन खराब न करें, अगर अच्छे काम कर रहे है तो कभी भी लोक-लाज की न सोचें। मनुष्य को माया-मोह से निकलकर जीवन की सत्यता को समझना चाहिए, संस्कार जीवन का अमूल्य भाग है, इसे कभी न भूलें। सामाजिक, पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करें। देखा जाए तो मानसिक विकार हमारी ही लापरवाही का नतीजा है। जैसी हमारी जीवनशैली है वैसा हमारा तन-मन बनता है। सबसे महत्वपूर्ण है कि हम समाधानी बने। अच्छा खाएं, अच्छा सोचें, खुश रहें और तनावमुक्त जीवन जिए।

- डॉ.प्रितम भि. गेडाम

संघ का संदेश

संघ प्रमुख ने यह बात मानी कि जनसंख्या को समस्या के रुप में देखना कतई जरुरी नहीं है और यह कि इसे डेमोग्राफिक डिविडेंड का रुप भी दिया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि इससे जुड़े हर पहलू का ध्यान रखते हुए पूरे देश की संपूर्ण आबादी के लिए उपयुक्त नीति लाई जानी चाहिए, तभी उसका वांछित लाभ मिल पाएगा।

मोहन भागवत के भाषण पर देश दुनिया की नजर इसलिए भी रहती है क्योंकि इसमें संघ की नीतियों और समाज तथा राष्ट्र के प्रति उसके दृष्टिकोण की नवीनतम झलक मिलती है। इस लिहाज से इस बार की दशहरा रैली को देखें तो पहली नोट करने वाली बात यह रही कि इसमें मुख्य अतिथि के रुप में जानी-मानी माउंटेनियर और दो बार एवरेस्ट फतह कर चुकीं संतोष यादव थीं। करीब सौ वर्षों के संघ के इतिहास में यह पहला मौका है, जब दशहरा रैली में चीफ गेस्ट के रुप में किसी महिला को बुलाया गया। जैसा कि संघ प्रमुख ने अपने भाषण में भी कहा- सनातन और नित्य नूतन इन दोनों का होना जरुरी होता है।

संघ की लंबी विचार यात्रा के दौरान भी इन दोनों कारकों के बीच संतुलन दिखता रहा है और उनके ताजा भाषण में भी इसकी साफ झलक मिलती है। उन्होंने ऐसे कई विषयों को उठाया, जिन्हें विवादित या संवेदनशील कहा जा सकता है, लेकिन उन पर पर्याप्त लचीलेपन का परिचय दिया। संघ प्रमुख भागवत ने महिलाओं के बारे में कहा कि आधे समाज की उपेक्षा करके देश का नवनिर्माण नहीं हो सकता। अल्पसंख्यक समाज को लेकर लगने वाले आरोपों का भी उन्होंने जवाब दिया। उन्होंने कहा कि समाज को तोड़ने की कोशिश हो रही है और इसे रोकने के लिए मुस्लिम समाज से संवाद कायम रखना होगा। लेकिन कई पहलुओं पर यह भी स्पष्ट कर दिया कि वहां संघ के रुख में कोई बदलाव नहीं आने वाला। उदाहरण के लिए, जनसंख्या नीति की वकालत।

संघ प्रमुख ने यह बात मानी कि जनसंख्या को समस्या के रुप में देखना कतई जरुरी नहीं है और यह कि इसे डेमोग्राफिक डिविडेंड का रुप भी दिया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि इससे जुड़े हर पहलू का ध्यान रखते हुए पूरे देश की संपूर्ण आबादी के लिए उपयुक्त नीति लाई जानी चाहिए, तभी उसका वांछित लाभ मिल पाएगा। मगर संघ की पारंपरिक दृष्टि के मद्देनजर विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच जनसंख्या के असंतुलन के मसले की ओर ध्यान खींचना भी वह नहीं भूले। इसी तरह हिंदू राष्ट्र का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि कई लोग इस अवधारणा से सहमति जताते हुए भी हिंदू शब्द के इस्तेमाल से बचना चाहते हैं।

उन्होंने कहा कि संघ को इस पर कोई एतराज नहीं है, जिसे जो शब्द उपयुक्त लगे, उसका प्रयोग कर सकता है, लेकिन संघ अपने स्तर पर इस शब्द का प्रयोग करता रहेगा। जाहिर है, कोई भी संगठन आलोचकों या विरोधियों के कहे मुताबिक अपने विचारों में बदलाव नहीं कर सकता, लेकिन अच्छी बात यह है कि संघ अपने विचारों के संभावित प्रभावों को लेकर न केवल गंभीर और संवेदनशील है बल्कि यथासंभव लचीलापन भी दर्शा रहा है। इससे उसकी परिपक्वता झलकती है।

माताराणी की भावभीनी बिदाई, घट-जवारों का विसर्जन

असत्य पर सत्य की जीत के प्रतीक के रुप में रावण के पुतले का दहन

विजयादशमी पर्व के अवसर पर असत्य पर सत्य की जीत के रुप में वर्षों से चली आ रही परंपरा के रुप में रावण के पुतले का विभिन्न स्थानों पर दहन कर नागरिकों द्वारा एक दूसरे को विजयदशमी पर्व की शुभकामनाएं दी गई। गोंदिया शहर में विराजित सार्वजनिक पंडालों की बड़ी प्रतिमाओं का विसर्जन महाराष्ट-मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित रजेगॉव बाघ नदी घाट पर किया गया। जिसके लिए प्रशासन द्वारा क्रेन की व्यवस्था करने के साथ ही लाइटिंग व सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। विसर्जन का कार्यक्रम दोपहर से शुरु होकर देर रात तक चलता रहा। इस दौरान जिले में संपूर्ण क्षेत्र में शांति बनी रही।

बुलंद गोंदिया - शारदीय नवरात्र के पावन अवसर पर जिले के विभिन्न स्थानों पर माँ जगदंबा की प्रतिमाओं को सार्वजनिक स्थानों पर विराजित कर 9 दिनों तक विभिन्न धार्मिक, सामाजिक आयोजन के साथ निरंतर महाप्रसाद का सिलसिला चलता रहा। जिसके पश्चात विजयादशमी के दिन सार्वजनिक स्थानों पर विराजित माता की प्रतिमाओं को भावभीनी विदाई देने के साथ ही जिले के विभिन्न दुर्गा मंदिरों में स्थापित घट व जवारो का भी विसर्जन किया गया। इसके साथ ही

दशहरा पर्व पर स्वास्थ्य विभाग का अभिनव पहल

विभिन्न रोगों के प्रतिकात्मक पुतलों का दहन

बुलंद गोंदिया - जिला एकीकृत स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण समिति गोंदिया की ओर से समस्त संचारी एवं असंक्रामक रोगों के दाह संस्कार के अनुसार रोग की सांकेतिक प्रतिमा बनाकर उसे दस रोगों के नाम से दस मुख तक जलाने का कार्य, स्वास्थ्य विभाग जिला परिषद गोंदिया, जिला सर्जन गोंदिया, जिला क्षय रोग विभाग, जिला हिवटाप विभाग के संयुक्त सहयोग से गोंदिया क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों में इस बीमारी के प्रति लोगों में जागरुकता पैदा करना था। जिला परिषद के अध्यक्ष पंकज रहांगदाले ने रोग का प्रतीक पुतला दहन किया। कार्यक्रम के अवसर पर जिला परिषद के उपाध्यक्ष एवं स्वास्थ्य एवं शिक्षा के अध्यक्ष यशवंत गणवीर, अध्यक्ष समाज कल्याण पूजा सेठ, प्रभारी जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. दिनेश सुतार, जिला क्षयरोग अधिकारी डॉ. नितिन कापसे, जिला शीतकालीन अधिकारी वेदप्रकाश चौरागड़े, सहायक निदेशक कुष्ठरोग डॉ. रोशन राउत, जिला महामारी विज्ञान अधिकारी डॉ. निरंजन अग्रवाल, जिला महामारी विज्ञानी डॉ. सुशंकी कापसे, जिला आयुष अधिकारी मीना वक्री, जिला कार्यक्रम प्रबंधक अर्चना वानखेड़े, जिला आईईसी इसका संचालन अधिकारी प्रशांत खरात की मौजूदगी में किया गया। स्वास्थ्य विभाग जिला परिषद, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, जिला प्रशिक्षण केन्द्र आदि। कार्यालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

शहर के चहुमुखी विकास से बदलेगी गोंदिया शहर की तस्वीर - वि.अग्रवाल

विधायक द्वारा गोंदिया पब्लिक स्कूल से पांगोली रास्ता निर्माण हेतु निधी मंजूर

बुलंद गोंदिया - विधायक विनोद अग्रवाल ने यह साबित कर दिया है की वह जनता के सेवक है, सभी को भलीभांति ज्ञात है की संपूर्ण महाराष्ट्र और गोंदिया विधानसभा में उनकी छबी जनता के सेवक के रुप में जानी जाती है और उनके द्वारा किए गए कार्य की प्रशंसा पुरे विधानसभा क्षेत्र जिले साथ ही महाराष्ट्र में की जाती है। उनकी अनेक संकल्पनाओं से क्षेत्र में विकासकार्यो को अंजाम मिला है। उन्होंने शहर के विकास के लिए करोड़ो रुपयों की निधी मात्र 4 वर्षो में विविध फंडो के द्वारा मंजूर करवाई है और आज गोंदिया शहर में अनेक जगहों पर विकासकार्य शुरु है। हाल ही में विधायक विनोद अग्रवाल ने गोंदिया पब्लिक से पांगोली नदी रस्ते के निर्माण के लिए 50 लाख की निधी मंजूर करवाई है जिसका भूमिपूजन भी विकासकार्य के शुरुवात से हुई। इस अवसर विधायक विनोद अग्रवाल का स्वागत रुपी सत्कार और आभार व्यक्त गोंदिया पब्लिक स्कुल के प्राचार्य और सभी शिक्षको द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम में विधायक विनोद अग्रवाल ने कहा कि वह क्षेत्र के और शहर के चहुमुखी विकास के लिए सदैव तत्पर थे और सदैव तत्पर रहेंगे ऐसा उन्होंने कहा और कुछ ही दिनों में अनेक विकासकार्यो के भुमिपुजन गोंदिया शहर में कामो की शुरुवात के साथ किये जायेंगे। इस अवसर पर भाउराव उके सभापती मुनेश रहांगडाले, छत्रपाल तुरकर, मोहन गौतम धर्मेश (बेबी) अग्रवाल, कशिश जायसवाल, शहर अध्यक्ष, घनश्याम पानतवने पूर्व गटनेता, शिव शर्मा पूर्व नप उपाध्यक्ष, डॉ.अमित बुद्धे, प्रा.अर्जुन बुद्धे, रोहित अग्रवाल, राहुल यादव पूर्व पार्षद, विवेक मिश्रा पूर्व पार्षद, अभय मानकर, अनिल शरणागत, धर्मेन्द्र डोहरे, अतुल शरणागत तथा इत्यादी कार्यकर्त्ता और शहर के पदाधिकारी साथ ही गोंदिया पब्लिक स्कुल के सभी बच्चे इस अवसर पर उपस्थित थे।

राष्ट्रीय कृमि मुक्ति जनजागरण अभियान शुरु

बुलंद गोंदिया - बच्चों में कुपोषण एवं रक्ताल्पता तथा उनके शारीरिक विकास एवं मानसिक विकास पूर्ण नहीं होने से बचाव के उपाय के रुप में गोंदिया जिले के एक से 19 वर्ष की आयु के बालक-बालिकाओं को 10 अक्टूबर को नि:शुल्क कृमिनाशक गोलियां दी जाएंगी।

विद्यालय जाने वाले 6 से 19 वर्ष की आयु के बालक-बालिकाओं को प्रत्येक विद्यालय में संस्था स्तर पर शिक्षकों के माध्यम से भोजन के बाद गोलियां खिलाई जाएंगी। जबकि आंगनबाडी एवं गैर विद्यालय जाने वाले बालक एवं बालिकाओं को 1 से 19 वर्ष की आयु के बीच आंगनबाडी सेवकों के माध्यम से आंगनबाडी में गोलियां खिलाई जायेंगी। जिन लड़कों और लड़कियों को 10 अक्टूबर 2022 को कृमिनाशक गोली नहीं दी जाएगी, उन्हें 17 अक्टूबर को माप के दिन गोली दी जाएगी।

अभियान की सारी योजना जिला स्वास्थ्य प्रशासन के माध्यम से पूरी कर ली गई है। गांव-गांव अभियान पर जोर है। गांव, स्कूल में प्रभातफेरी, बैनर और दावंडी के जरिए लोगों को जानकारी दी जा रही है। अभियान के सिलसिले में 8 अक्टूबर को गोंदिया शहर में प्रभातफेरी और चित्ररथ के माध्यम से सेंट्रल रोड पर जन जागरण का आयोजन किया गया। इसकी शुरुआत प्रभातफेरी जिला सामान्य अस्पताल केटीएस से हुई। जिला सर्जन डॉ. अमरीश मोहबे और गोंदिया जिला परिषद के प्रभारी जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. दिनेश सुतार ने हरी झंडी देकर शुरुआत की। बाई गंगाबाई महिला अस्पताल के नर्सिंग कॉलेज के छात्र, के.टी.एस. जिला सामान्य अस्पताल, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, स्वास्थ्य विभाग के विभिन्न विभागों के समन्वयकों के संयुक्त सहयोग से प्रभात फेरी सफल रही।

प्रभात फेरी और चित्ररथ के बीच जिला आईईसी अधिकारी प्रशांत खरात, जिला महामारी विशेषज्ञ डॉ. सुशांकी कापसे, जिला कार्यक्रम प्रबंधक अर्चना वानखेड़े, जिला आयुष अधिकारी डॉ. मीना वक्री, जिला दंत चिकित्सा और मौखिक विशेषज्ञ, अनिल अटे, जिला एन.सी.डी. समन्वयक डॉ. स्नेहा वंजारी, स्वास्थ्य सहायक रवींद्र श्रीवास उपस्थित थे।

सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (सीएचओ), आरोग्य सेवक, आरोग्य सेवक, आशासेविका, आंगनबाडी सेविका जिले के सभी गांवों में सामूहिक भ्रमण एवं स्कूल मॉर्निंग राउंड के माध्यम से जन जागरुकता अभियान चला रहे हैं। जिले के सभी उपकेंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, उप जिला अस्पतालों, ग्रामीण अस्पतालों और जिला अस्पतालों में बैनर और होर्डिंग के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया गया है।

१.४ टन रेलवे की संपत्ति चोरी

एक कबाड़ व्यवसायी सहित दो आरोपी गिरफ्तार

बुलंद गोंदिया - गोंदिया रेलवे सुरक्षा बल क्राइम ब्रांच की शाखा को शनिवार 8 अक्टूबर को रेलवे की संपत्ति बड़े पैमाने पर चोरी होने तथा उसकी खरीदी एक कबाड़ी द्वारा किए जाने की गुप्त जानकारी प्राप्त होने पर प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त रेलवे सुरक्षा बल बिलासपुर ए. एन.सिन्हा के मार्गदर्शन में गोंदिया रेलवे सुरक्षा बल क्राइम ब्रांच के प्रभारी निरीक्षक अनिल पाटिल के नेतृत्व में उप निरीक्षक के.के. दुबे सहायक उपनिरीक्षक एसएस ढोके, प्रधान आरक्षक आर.सी.कटरे व आरक्षक नासिर खान के दल द्वारा छापामार कार्रवाई की गई। जिसमें गोंदिया जिले के ग्राम गोगले निवासी कबाड़ी व्यवसाई के पास से रेलवे की चुराई गई। संपत्ति जिसमें लोहा पटरी व अन्य करीब 1.4 टन जिसकी अंदाजा कीमत 63,000 जप्त की गई। उपरोक्त मामले में कबाड़ी व्यवसाय आरोपी फिरोज उर्फ छोटू (55), सविंदर विश्वकर्मा (30) व कन्हैया उईके (20) को हिरासत में लिया गया। उपरोक्त संपत्ति को चुराकर चोरी कर कबाड़ व्यवसाई को बेचने की स्वीकृति की गई। उपरोक्त प्रकरण में आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई कर रेलवे सुरक्षा बल गोंदिया के सुपुर्द किया गया। आरोपियों के खिलाफ रेलवे की संपत्ति पर अवैध कब्जा अधिनियम की धारा 3(अ) के तहत मामला दर्ज कर आगे की जांच रेलवे सुरक्षा बल द्वारा की जा रही है।

शरद पूर्णिमा की खीर में दवाई लेने से मरीजों को मिलती राहत

बुलंद गोंदिया - अस्थमा के मरीजों को वर्ष में एक बार शरद पूर्णिमा की खीर में आयुर्वेदिक दवाई का सेवन करने से उन्हें अस्थमा में काफी राहत मिलती है। जिसके लिए इस वर्ष शरद पूर्णिमा के अवसर पर बैद्यनाथ आयुर्वेदिक भवन द्वारा गोंदिया में कंपनी के वितरक नागेश्वर मेडिकल स्टार्स सराफा लाइन में नि:शुल्क दवाई का वितरण किया गया।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी आयुर्वेदिक की जानी मानी कंपनी बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन द्वारा दमा (अस्थमा) की दवा निशुल्क दी गयी। इस दवा की जानकारी देते हुए गोंदिया के वितरक श्यामसुंदर शर्मा ने बताया कि यह दवा वर्ष में एकबार शरद पूर्णिमा के दिन खीर में लेने से अस्थमा के मरीज को किसी भी प्रकार की तकलीफ नहीं होती। यह दवा हर दमा मरीज को लेना चाहिए। उक्त दवा के बारे में बैद्यनाथ कंपनी के वितरक एजेंट नागेश्वर मेडिकल स्टोर्स (बैद्यनाथवाले), सराफा लाइन (9423113003 एवं 9673796943) में नि:शुल्क उपलब्ध है।

वर्षा पटेल व राजेन्द्र जैन ने माता के चरणों में नमन कर की सुख-शांति समृद्धि की प्रार्थना

बुलंद गोंदिया - पावन व धार्मिक नगरी गोंदिया शहर में शारदीय नवरात्रि उत्सव के दौरान माँ जगदम्बा के भक्तिमय माहौल में गोंदिया शहर के विविध स्थानों पर विराजमान माँ दुर्गाजी के दरबार में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर वर्षा प्रफुल पटेल व पूर्व विधायक राजेंद्र जैन ने माताराणी के चरणों में नमन कर माँ का आशीर्वाद ग्रहण किया एवं गोंदिया जिले के समस्त भाविक भक्तगणो के कल्याण हेतु सुख, शांति व समृद्धि की कामना की।

गोंदिया शहर में विराजमान माँ दुर्गाजी के गड्ड़ाटोली, श्री टॉकिज चौक, दुर्गा चौक, सिंधी कॉलोनी, दशहरा मैदान स्थित माता के दरबार मे हाजरी लगाकर माताजी का आशीर्वाद लिया स मनोहर कॉलोनी में गरबा उत्सव, नूतन स्कुल में गरबा उत्सव, पोवार बोर्डिंग रास गरबा समिति सदस्यों से भेंट की साथ ही भक्तगणों से भेंट दौरान उन्हें नवरात्री की बधाई दी। इस अवसर पर वर्षा पटेल के साथ पूर्व विधायक राजेंद्र जैन, देवेन्द्रनाथ चौबे, जनकराज, सचिन शेंडे, कमलेश खोकरे, नरेश जैन, राजू एन.जैन, निखिल जैन, साजन वाधवानी, भगत ठकरांनी, लक्ष्मीकांत रोचवानी, प्रकाश हसरानी, हरिराम आसवानी, केतन तुरकर, रविकांत बोपचे, हरी मोटवानी, निखिल मटानी, राजेश वर्मा, महेश दादलीवाल, संजय शर्मा, मुकेश जैन, पंकज चंद्रवंशी, गुन्नु चौरसिया सहित बहुसंख्या से भाविक भक्तगण उपस्थित थे।

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल द्वारा बुलंद गोंदिया साप्ताहिक समाचार पत्र भवानी प्रिंटींग प्रेस, गुरुनानक वार्ड, गोंदिया, ता.जि.गोंदिया से मुद्रित व बुलंद गोंदिया भवन, जगन्नाथ मंदिर के पास गौशाला वार्ड, गोंदिया ४४१६०१, ता.जि.गोंदिया से प्रकाशित। संपादक : संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल, मो.क्र. ९४०५२४४६६८। (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिये जिम्मेदार) प्रकाशित किये गये समाचार व लेख से संपादक सहमत है। न्यायालय क्षेत्र गोंदिया।